निर्विका

प्यार भरी नज़्मों कविताओं का संग्रह

निवास चौधरी

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Niwas Choudhary 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-623-3

Cover design: Aafiya Saifi
Typesetting: Namrata Saini

First Edition: April 2026

तू इसके काबिल तो नहीं

तू इसके काबिल तो नहीं, फिर भी
तू ज़िंदा रहेगी मेरी यादों में,
मेरी किताबों में,
मेरे काँपते हाथों में,
मेरे तड़पते जज़्बातों में,
ठंडी सर्द रातों में,
उन मुलाकातों में।

तू ज़िंदा रहेगी मेरी यादों में,
तू ज़िंदा रहेगी मेरे साथ—
मंदिरों में, दुआओं में,
सुनसान रातें, दिन की खूबसूरत फ़िज़ाओं में,
मेरे साथ किए वादों में,
कभी न भूल पाने वाले झूठे इरादों में।

मैं रहूँ या न रहूँ,
तू रहे न रहे,
हम आवाज़ बनकर गूँजते रहेंगे
हर एक के जज़्बातों में।......

आभार प्रदर्शन,

'**निविका**' केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि मेरे अंतर्मन की उन भावनाओं का प्रतिबिंब है, जिनसे हम सभी जीवन के किसी न किसी मोड़ पर ज़रूर गुज़रते हैं। प्यार का वो कोमल अहसास, साथ देखे गए सपने और फिर अचानक रास्तों का अलग हो जाना—यह किताब उस पूरे सफर का एक जीवंत वृतांत है। हर एक कविता आपको खुद से जुड़ी हुई महसूस होगी।

अक्सर जब हम मिलकर कोई सपना देखते हैं और साथी बीच राह में साथ छोड़ देता है, तो वह केवल सपने नहीं तोड़ता, बल्कि हमारी उम्मीदें, अहसास और जुनून भी खत्म कर जाता है। लेकिन ऐसे में जब कोई आकर आपके उस टूटे हुए सपने को साकार करने में हाथ बँटाता है, तो वह किसी फरिश्ते से कम नहीं होता।

डायरी के पन्नों में सालों से दबे मेरे इन एहसासों को आज जो मुकाम मिला है, उसका पूरा श्रेय मेरे परम मित्र **नरेश रॉयल** को जाता है। मैं **नरेश** का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मेरे मौन जज़्बातों को महसूस किया और अपनी कड़ी मेहनत से उन्हें आप सभी के दिलों तक पहुँचाने का मार्ग प्रशस्त किया।

नरेश के निस्वार्थ सहयोग और संबल के बिना **'निविका'** का यह सफ़र शायद कभी पूरा नहीं हो पाता। मेरे बिखरे हुए अहसासों को सँवारने और उन्हें एक नई पहचान देने के लिए मैं उनका सदैव ऋणी रहूँगा।

— निवास चौधरी(निवि)

जर्नलिस्ट

प्यार

प्यार एक एहसास है। प्यार कभी नहीं मरता। प्यार में कभी कोई पहला, दूसरा नहीं होता, न ही प्यार में कोई ब्रेकअप होता है। और जहाँ यह सब होता है, वहाँ यही सब होता है, प्यार नहीं होता। प्यार अजर है, प्यार अमर है। हाँ, अगर किसी ग़लत इंसान के साथ आपको प्यार हो जाता है, तो प्यार नहीं मरता, तब मरता है आपका विश्वास, आपके जज़्बात, आपके चेहरे का नूर, आपकी जवानी के महत्वपूर्ण दिन और कभी किसी पर न कर पाने वाला भरोसा।

सारी दुनिया की ख़ूबसूरती आपके सामने हो और फिर भी आपकी आँखें सिर्फ़ उसका दीदार करना चाहें जिसे आप प्यार करते हों। भरी महफ़िल भी जिनके बिना वीरान लगे, वह प्यार है; जिसकी मायूसी आपके चेहरे का नूर उड़ा दे, जिसके चेहरे की ख़ुशी आपके दिन भर के ग़म भुला दे। प्यार दुनिया का सबसे ख़ूबसूरत एहसास है, अगर आपका साथी वफ़ादार हो।

जिसके साथ आपने न जाने कितने सपने देखे हों, और उन सपनों के तुम दोनों साक्षी बने हो, वही सपने जब आपकी आँखों के सामने टूटते हैं। आपने जिसको कभी दर्द न देने की कसमें खाई हों, जब वही इंसान आपको दर्द देकर जाता है; जिससे सब कुछ बताने की उम्मीद हो, वह बिना बताए चला जाता है; जिसके लिए कभी आप सबसे पहले थे, आज शायद सबसे अंत में भी नहीं हो—यह अहसास इस धरती पर जहन्नम जैसा है।

तुम हो और तुम ही रहोगी, आखिरी साँस तक मोहब्बत मेरी,
मैं चेहरे देखकर मोहब्बत का लिबास नहीं बदलता

- निवास चौधरी

अनुक्रमणिका

इश्क़ का आगाज़ 1

पहली मुलाकात 3

इश्क़ है, इशारों में होता है 5

बेपरवाह सा प्यार 7

ऐसे चाहता कौन है? 8

बरसात की बूँदें 10

तेरा यूँ देख जाना 11

मुलाकातों का दौर 13

परवाज़ 15

काश ऐसा हो जाए 17

तेरे साथ वक़्त गुज़ारूँ 20

तेरी बहुत याद आती है 22

राह 24

खुशी 26

चाहत 28

मोहब्बत 30

मुलाकात 33

बेवफ़ाई 37

यादें 39

लाचार 40

ऐसा थोड़ी होता है 42

कुछ इस क़दर तोड़ा है 44

भुलाया नहीं जाता 46

तेरी बहुत याद आती है 47
लौट आ किसी बहाने से 49
चल एक मुलाकात करते हैं 50
मैं रो दूँगा 54
काश दोबारा मिल जाती 55
मोहब्बत के नाम पर 57
मोहब्बत में व्यापार 60
ख़बर 61
इश्क़ मुझे समझाते हो क्या 63
यादों का क्या किया जाए 64
बदले बदले तेवर 66
झूठे ख़त 67
बेशर्म 69
मेरा भरोसा 70
आइने के सामने कम जाता हूँ 71
एक मौत ऐसी भी 72
कभी नहीं जाने वाले थे 74
तेरे बिना 75
मन से हार जाना 77
अब वो शहर कैसा है? 78
किस क़दर तोड़ा होगा 79
पागलपन की हद 80
मैंने क्या हारा है? 81
जाना ज़रूरी था क्या? 82
तुम याद आने वाले हो 84
ये जो बड़ा इश्क़ इश्क़ करते हो 85
काश क़द्र करना सीख जाती 86

भ्रम 87
अपने आप से हारा हूँ.. 88
एक रोज़ मरने वाले.. 89
तुझे जानना है क्या.. 90
दाग़दार दामन.. 92
बर्बाद 93
रोज़ रोज़ थोड़ी आएँगे 94
इंतजार की इंतहा... 95
किसी एक के हो जाते तुम.. 96
ये दिन भी आने वाला है 98
मेरा अब सहारा कौन है 99
मुझे लौटा सकती हो क्या.. 100
दिल से उतर गए... 102
क़समें खा कर गया है.. 103
शिकायत.. 104
मेरा दर्द 105
बिखर जाने दो 106
ग़मों का हिसाब 108
खानदानी 109
मेरी आख़िरी हार 110
बगावत... 111

इश्क़ का आगाज़

पहली मुलाकात

तुझे याद है ना, वो पहली मुलाकात
वो घर में शादी वाली रात
तेरी वो नाचने की ज़िद
मेरा दिया गया वो साथ

वो घर के चौबारे में,
जब तु मेरे पास खड़ी थी
"मुझे अभी नहीं सोना पापा,"
ज़िद पर अड़ी थी

याद है क्या वो शहर जाने वाली बात
अपनी वो पहली मुलाकात

वो ग्रीन सी हुडी पहने,
तु नल की तरफ़ आई थी
चेहरे पर झूलते बाल
मुझे देख कर मुस्कराई थी
याद है क्या वो हाथ में, खत देने वाली बात
अपनी वो पहली मुलाकात

फ़िर तेरा मेरे पास मैसेज आना
खुशी के मारे मेरे हाथ से, फोन का गिर जाना
फ़िर तेरे एक फ़ोन पर

मेरा शहर छोड़ आना
तु और मैं, वो अंधेरी रात
वो अपनी मुलाकात

याद है क्या तुझे दिया वो काला धागा
जिसको दुआओं में मैंने था माँगा

तेरे साथ दुकान पर जाना
बीच रास्ते वो चॉकलेट खाना
भूल बैठी हो ना तुम आज हर बात
याद है ना अपनी वो पहली मुलाकात

इश्क़ है, इशारों में होता है

न उम्र का तक़ाज़ा होता इसमें
न देखे यह कोई दीवार,
बंदिशों में भला कहाँ होता है
इश्क़ है, इशारों में होता है।

आज आँखें देखी उसकी, कमाल थी
लगा दिल में कुछ-कुछ होता है।
इश्क़ है, इशारों में होता है।

उम्र में काफी छोटी थी मुझसे,
तो भला क्या होता है।
दिल से मैं भी तो बड़ा नहीं,
जाने दो उम्र से भला क्या होता है।
इश्क़ है, इशारों में होता है।

जवाँ रहना है, तो इश्क़ करना सीख लो
इसमें हर कोई दुल्हन की तरह रहता है।

उठकर कोई मन ही मन मुस्कुराए
तो कोई सोते-सोते भी रोता है।
इश्क़ है, इशारों में होता है।

ऐ दिल तेरे इशारे अनेक हैं
कोई आँख मिला जाता है,
तो कोई मंद-मंद मुस्कुरा जाता है।

कोई मिलने के बहाने आता है
तो कोई मिलने का बहाना ढूँढ़ लाता है,
पता नहीं इस इश्क़ के बाज़ार में क्या-क्या होता है,
इश्क़ है, इशारों में होता है।

बेपरवाह सा प्यार

ये बेपरवाह सा प्यार

ना चैन से सोने दे,
न खुलकर रोने दे।

ये बेपरवाह सा प्यार

समाज की न फ़िक्र इसको,
न देखे ये भव संसार|

ये बेपरवाह सा प्यार

हर वो चेहरा मासूम नजर आये,
आँखें कर बैठे जिसका दीदार।

दुनिया की फ़िक्र छोड़ दूँ,
ख़ुद को भूल बैठूँ हर क्षण, हर वार।

ये बेपरवाह सा प्यार

हो सकता है एक फलक,
नफरत कर बैठे निवी तुझसे जमाना।
मत भूल तेरा शिद्दत वाला प्यार

ये बेपरवाह सा प्यार।

ऐसे चाहता कौन है?

ख़्वाबों में भी तुम, दिन के उजालों में भी तुम,
बताओ ऐसे तड़पाता कौन है?
ये तो मैं चाहता हूँ,
बता ऐसे चाहता कौन है?

कमाल का होता है, तुझसे नजरें मिलाना,
हल्की सी हँसी,
फिर मेरा दिन-भर के लिए तड़प जाना,
पल-पल को ऐसे आखिर तरसाता कौन है?
बता ऐसे चाहता कौन है?

नजरें मिली तुझसे, और हम गुनहगार हो गए|
तेरी नजर में आशिक हम,
दुनिया की नजर में अब बेकार हो गए
आखिर तुझसा आँखों का नूर
मुझ पर बरसाता कौन है?
बता ऐसे चाहता कौन है?

तेरे लिए तड़प ही मुझे सकून देती है
तेरी चाहत ही मुझे जीने का जुनून देती है
पल- पल, हर पल तुम पर इस क़द्र मरता कौन है?
जैसे मैं चाहता हूँ तुझे,
बता ऐसे चाहता कौन है?

निवी हमसफर ना सही,
पर जिंदगी का सफर तो है तेरा
मैंने हाथ बढ़ा दिया,
तू बन अब मुकाम मेरा
हर साँस के साथ तुझे चाहूँ,
मुफ्त में ऐसे साँसें तुम पर लुटाता कौन है?
बता ऐसे चाहता कौन है?

बरसात की बूँदें

सावन का ये महीना उसके बदन को झाँक रहा,
अधखुली सी आँखें, होंठ शराबी
बारिश की बूँदों से जिस्म भीग रहा।

कितनी क़ातिलाना लग रही है अब निगाहें उसकी
जिस्म आशियाना ढूंढ रहा
थोड़ा दोष मौसम का है, थोड़ा उम्र का भी कसूर है इसमें
आज बेताब दिल उसकी बाँहें ढूंढ रहा।

ख़ुदा थोड़ा तो रहम कर इस चंदन सी काया पर,
बरसात की बूँदों से आज ज़रा-ज़रा महक रहा।

न वो रोक पायेगी ख़ुद को, अब इतना सहनशील मैं भी नहीं
अगर बूँदों का यूँ शोर रहा
चलो मिल जाने दो आज बरसों से प्यारे दिलों को
इश्क़ पर भला किसका जोर रहा।

सावन का ये महीना उसके बदन को झांक रहा
अधखुली सी आँखें, होंठ शराबी
बारिश की बूँदों से जिस्म भीग रहा।

तेरा यूँ देख जाना

तेरा यूँ देख जाना
कमाल का है तेरा यूँ देख जाना
पास से गुजरते हुए हल्का सा मुस्कराना
बहाना कौनसा बनाऊँ तुझे पास लाने का
तुझसे नज़रें मिलाने और तेरा हाथ दबाने का
चलो जाते-जाते पानी की बोतल दे जाना
कमाल का है तेरा यूँ देख जाना

सबसे से नज़रें छुपा के जब भी तू नज़रें मिलाती हैं
दिल चाहता है तेरी आँखों में डूब जाना
कमाल का है तेरा यूँ देख जाना

सोता रहुँ तेरी गोद में हरदम
कोई जुदा होने को ना कहें,
ना मैं दूर रहूँ तुझसे, ना तू मुझसे दूर रहे
तड़पा जाता है तेरा पल भर भी दूर जाना
कमाल का है तेरा यूँ देख जाना

याद बहुत आती है तेरी, ख़ुद को संभालूं भी तो कैसे
किसी अपने को छोड़ आया हूँ बहुत दूर,
लगता है अब ऐसे
पास आ तो रही हो, सोच लो दूर ना जाने दूँगा
तुझसे अब दूर जाना मतलब जिस्म से, जान का निकल जाना

कमाल का है तेरा यूँ देख जाना
तेरा पीछे देखकर यूँ मुस्कराना
तुझे कोई कुछ कहें और हम सहन करें
निवि का ये फ़ितूर नहीं
मुझे महसूस कर अब निविका
मैं तुझसे दूर नहीं
कमाल का है तेरा यूँ देख जाना
हल्की सी हँसी पीछे मुड़कर मुस्कराना
कमाल का है तेरा यूँ देख जाना

मुलाकातों का दौर

मुलाकातों के दौर में एक याद मेरी भी रखना
यादों के इस दौर में एक याद मेरी भी रखना
मुलाकातों के इस रास्ते पर एक मुलाकात मुझसे भी रखना

सूना सूना सा है आशियाना तेरे बिना
तेरे तकिये के पास में एक तकिया मेरा भी रखना
यादों के इस दौर में एक याद मेरी भी रखना

अधूरा सा रहता हूँ तेरे बिना
मौत से भी बदतर लगता है तेरे बिना जीना
तेरे हाथों में एक हाथ मेरा भी रखना
यादों के इस दौर में एक याद मेरी भी रखना

अच्छा लगता है तुझसे से छुप-छुप कर मुलाकात करना
तेरी बाँहों में मेरी बाँहें और तेरे होंठों पे मेरे होंठ रखना
यादों के इस दौर में एक याद मेरी भी रखना

मेरी है तू और मेरी रहेगी
चाहता हूँ तुझे और चाहता रहूँगा
मुझ पर भरोसा यूँ ही जताए रखना
यादों के इस दौर में एक याद मेरी भी रखना

वादा कर हर कदम पर साथ देगी मेरा
मेरे हालात जो भी हों, नहीं छोड़ूंगा साथ तेरा
मेरे हाथ में तेरा हाथ, मुझको यूँ ही बाहों में छुपाये रखना
यादों के इस दौर में एक याद मेरी भी रखना

परवाज़

काश ऐसा हो जाए

काश ऐसा हो जाए
मैं कुछ न कहूँ और तू समझ जाए
मेरी हलकी सी मुस्कान पे तू भी मुस्कुराए
काश ऐसा हो जाए

एक वक़्त था जब नज़रें चुराकर देखता था
जब ग़ौर से देखा तो नज़रें हटा ही न पाया
मैं सब समझ गया पर तुम्हें कौन समझाए
काश ऐसा हो जाए

वो रात भर जागना, वो फ़ोन पे बातें करना
वो आवाज तुम्हारी, वो आहें भरना
ख़ुदा करे वो पल फिर लौट आए
काश ऐसा हो जाए

बड़ी शिद्दत से चाहा तुझे, बड़ी शिद्दत से माँगा तुझे
क्या शिद्दत से चाहना गुनाह हैं, बता मुझे
काश चाहत के ये पल कुछ और ठहर जाए
काश ऐसा हो जाए

घंटों तुझे देखता हूँ फिर भी चाहत की आस रहती है
माना कुछ पल तेरे साथ गुज़ारता हूँ
पर एक ख़ूबसूरत लम्हे की आस रहती है
कभी न भूल पाए तू वो वक़्त मिल जाए
काश ऐसा हो जाए

हो सकता है मेरी चाहत नामंज़ूर हो तुम्हें
पर इस बात की क्या गारंटी है
यही चाहत तुझे रुलाये, फिर ढूँढे
नज़रें तुम्हारी और हम बहुत दूर चले जाए
काश ऐसा हो जाए

ये वक़्त का फ़रमान है, आज मेरा दिल
तेरे लिए धड़कता है, कल तेरा मेरे लिए धड़क जाए
आज मोहब्बत मुझे है तुझसे, कल तुझे मुझसे हो जाए
काश ऐसा हो जाए

आज नफ़रत है तुझे इश्क़ से,
सोच कल इश्क़ को तुझसे नफ़रत हो जाए
आँखें डालकर देख मेरी आँखों में,
शायद तुझे भी मोहब्बत हो जाए
काश ऐसा हो जाए

तेरी बाँहों को अपना आज बनाते है
तेरे होंठों को ताज बनाते है
यादों का सुनहरा कल बन जाए
काश ऐसा हो जाए

क़द्र करना सिख चाहत की
आज हम आँसू बहाते है
कल यादों में तू बहाए
काश ऐसा हो जाए

मैं बुरा ही सही
अगर मेरी चाहत तुझे बुरी नज़र आए
समझने की कोशिश कर,
हो सकता है तू भी समझ जाए
काश ऐसा हो जाए

चाहता हूँ और चाहूँगा तुझे
भले ही रोने में ज़िन्दगी गुजर जाए
काश ऐसा हो जाए
मैं कुछ न कहूँ और तू समझ जाए

तेरे साथ वक़्त गुज़ारूँ

तेरे साथ वक़्त गुज़ारूँ
और वक़्त की मैं आस न रखूँ
यादों में रहे हर पल तू और
किसी को पास ना रखूँ
तेरे साथ वक़्त गुज़ारूँ
और वक़्त की मैं आस न रखूँ

है तू मेरे पास तो क्यों
मैं जन्नत के सपने देखूँ
तू अगर दे साथ मेरा
तो मैं पीछे मुड़कर न देखूँ
तेरे साथ वक़्त गुज़ारूँ
और वक़्त की मैं आस न रखूँ

हर सपने को अपना वक्त
हर लफ़्ज़ को अल्फ़ाज़ बना दूँ
ऐसे दूँ तुझे हर पल
हर पल का तुझे मोहताज बना दूँ
चल बैठें पार्क की किसी बेंच पर
एक पल तुझे निहार सकूँ
तेरे साथ वक़्त गुज़ारूँ
और वक़्त की मैं आस न रखूँ

क़िस्मत नहीं इसे बेबसी समझ हमारी
कि साथ होकर भी साथ नहीं हैं
तू चंद लम्हों में समेटना चाहती है मुझे
इन लम्हों के बिना हमारी तो दुनिया ही नहीं है
साथ है हमारा अपनों जैसा
फिर भी तुझे अपना ना कह सकूँ
तेरे साथ वक़्त गुज़ारूँ
और वक़्त की मैं आस न रखूँ

चाहत इतनी है चाहत को भी
चाहत के बारे में कह न सकूँ
हाल-ए-दिल अब ये है कि
तेरे बिना एक पल भी रह ना सकूँ
तेरे साथ वक़्त गुज़ारूँ
और वक़्त की मैं आस न रखूँ

तेरी बहुत याद आती है

कहो ना तेरी बहुत याद आ रही है,
साले, तुझे ढंग से बैठना नहीं आता,
कैसे बैठता है समझ नहीं आता।

बाइक पे तेज चलता है,
तो जान निकल जाती है,
कहो ना तेरी बहुत याद आ रही है।

वो छत से तेरा फ्लाइंग किस देना,
तू तो सब कुछ है मेरा
और फिर मुस्करा देना।

बहुत दिन हो गए शहर गए हुए, वापस आ जा।
मैं कुछ नहीं जानती,
तेरे अलावा मैं किसी को अपना नहीं मानती।

पुराने पल सोच सोच के जान जा रही है,
कहो ना निवि, तेरी बहुत याद आ रही है।

मैं आपकी हूँ और आपकी ही रहूँगी,
तो क्यों मुझे रोता छोड़ गई?

सुनो ना, कस के पकड़ लो मुझे, फिर से कह दो ना,
कि तुम्हारी हूँ, मेरी जान जा रही है,
कहो ना तेरी बहुत याद आ रही है।

छीन लो ना मेरे हाथों से सिगरेट, कह दो ना,
मेरे होंठों में क्या कमी है?

तेरे साथ बिताये पलों की याद आ रही है,
कहो ना निवि, तेरी बहुत याद आ रही है।

राह

कौन देखेगा तेरी हर पल राह
कौन पुकारेगा तेरे नाम को

इतना जुड़ गया हूँ तुझसे
कि बिन तेरे अधूरा सा लगता हूँ
साथ नहीं निभा सकता
फिर भी तेरे साथ पूरा सा लगता हूँ

किधर से आई तू ज़िन्दगी में
किधर से समा गयी तू ज़िन्दगी में
मैं रटता ही रहा गया तेरे नाम को
कौन देखेगा तेरी हर पल राह
कौन पुकारेगा तेरे नाम को

तू छोड़ कर जाने की ज़िद करती है
कभी सोचा है दिल पर क्या गुजरती है
कभी आँखों में देखकर
पुकारा है मेरे नाम को
कौन देखेगा तेरी हर पल राह
कौन पुकारेगा तेरे नाम को

कैसे कहूँ तुझसे कि भूलाना होता
तो कब का भूला दिया होता

हर रिश्ता भुलाने के लिए नहीं होता
सुकून से सोती है जब दुनिया
रातो में पुकारा तेरे नाम को
कौन देखेगा तेरी हर पल राह
कौन पुकारेगा तेरे नाम को

यूँ ही नहीं तुझसे प्यार मांगता हूँ
साथ गुज़ारे लम्हों का हिसाब मांगता हूँ
प्यार से बढ़कर तुझे प्यार किया है मैंने
घंटो बैठकर इंतजार किया है मैंने

आँखों में आँसू
इंतज़ार में काट दिया हर एक रात को
कौन देखेगा तेरी हर पल राह
कौन पुकारेगा तेरे नाम को

ख़ुशी

हर पल थोड़ी ख़ुशी ढूँढता हूँ
तेरे दिल में अपनी जगह ढूँढता हूँ

रूठ जाता हूँ कभी तन्हा होकर
नींद से उठ जाता हूँ कभी रोकर

कभी लिखते लिखते शाम हो जाती है
कभी रोते रोते सुबह हो आती है

तेरे हाथों की लकीरों में
मेरी किस्मत ढूँढता हूँ

हर पल थोड़ी ख़ुशी ढूँढता हूँ
तेरे दिल में अपनी जगह ढूँढता हूँ

मेरी चाहत कमजोर थी
या तेरी बेवफ़ाई पुरज़ोर थी
तेरी यूँ बेवफ़ा होने की वजह ढूँढता हूँ

हर पल थोड़ी ख़ुशी ढूँढता हूँ
तेरे दिल में अपनी जगह ढूँढता हूँ

शुरुआत यादों से हुई इसमें रज़ा क्या है
तुझसे अब मोहब्बत है बता सज़ा क्या है

दिन इंतज़ार में गुज़र जाते हैं
रात ख़्वाबों में गुज़र जाती है

आँखों में आज भी नींद ढूँढता हूँ
हर पल थोड़ी ख़ुशी ढूँढता हूँ
तेरे दिल में अपनी जगह ढूँढता हूँ

रोएगी तू भी रोऊँगा मैं भी
भूल तू भी, नहीं पायेगी
भूला में भी नहीं पाउँगा

चल, जिंदगी भर मिलने का
कोई बहाना ढूँढता हूँ

हर पल थोड़ी ख़ुशी ढूँढता हूँ
तेरे दिल में अपनी जगह ढूँढता हूँ

चाहत

मैं ये नहीं कहता अपने स्वार्थ के लिए कोई नहीं चाहेगा
तुझे गोद में उठाकर चुम ले, अब ऐसा जन्मदिन नहीं आएगा।

मिल जाएँगे अनेक तोहफे देने वाले तुम्हें,
भरी बरसात में थामे वो लम्हा नहीं आएगा।

हर दफ़ा जब भी मुलाकात होती हैं,
घुटनों के बल बैठ प्रपोज़ करने वाला नहीं आएगा।

तेरे ही कमरे में तुझे थामे
और गुदगुदी के साथ खिलखिलाये
चेहरे पर ऐसी कोई हंसी ना ला पाएगा।

एक जगह बैठकर हँसे हैं दोनों,
रुलाने को तो ज़माना आएगा।

याद रखना चाहने वाले बहुत आएँगे,
पर भरी महफ़िल में तुझे अपना कहें
ऐसा तो कोई नहीं आएगा।

ये मत पहन कर जाना, किसी को देखना मत,
अपनों की तरह डाँटे, ऐसा हमदर्द नहीं आएगा।
चाहने वाले आ सकते हैं,
तू दुनिया की सबसे अच्छी इंसान बने,

किसी में ऐसा फ़ितूर नहीं आएगा।
सरदर्द होने पर भरी दोपहर में घर से निकल जाना,
तेरी शॉपिंग के लिए सारा शहर घूम आये
ऐसा तो कोई नहीं आएगा।

ख़ुद बर्बाद हो चूका हूँ, पर तू कभी बर्बाद ना हो,
ग़लत संगत तेरे पास ना हो,
ऐसा सोचे वो इंसान नहीं आएगा।
चाहने को दुनिया आएगी पर कोई मुझसा नहीं आएगा।

मोहब्बत

क्या मोहब्बत कर हमने गुनाह कर लिया
उठते है उसी के ख़्याल में,
सोते है उसी के ख़्याल में
मैंने तो हर पल का साथी चुन लिया
अब वो ही बताए
क्या मोहब्बत कर हमने गुनाह कर लिया

जलता रहा अकेला ही
इस मोहब्बत की आग में
उसमे कभी महसूस तक न किया
अब वो ही बताए
क्या मोहब्बत कर हमने गुनाह कर लिया

कट रहे है हर पल ऐसे
हर पल पे मौत का पहरा हो जैसे

टूट रहा हूँ अंदर से हर पल ऐसे
मानो घाव बहुत गहरा हो जैसे

ज़िंदगी का हर पल मैंने बर्बाद कर लिया
अब वो ही बताए
क्या मोहब्बत कर हमने गुनाह कर लिया

दिल में छुपाई यादों से सँवारा है तुझे
ख़ुदा कसम जिस्म से रूह तक उतारा है तुझे

घंटों अकेला बैठकर तेरा इंतजार किया है
अब तू ही बता
क्या मोहब्बत कर हमने गुनाह कर लिया

मैं तो कल भी तेरा था, आज भी तेरा हूँ
क्यों मुझे अकेला रोने को छोड़ दिया
क्यों इन बुरे लम्हों में मेरा साथ छोड़ दिया

सच मान, मैंने हर साँस के साथ
तेरा नाम लिया, अब तू ही बता
क्या मोहब्बत कर हमने गुनाह कर लिया

मत भूल, कोई हर पल तेरे लिए मर रहा है
हर रात की तन्हाई तेरे नाम कर रहा है

तू खुश है तेरे आज में, तो जी तेरी खुशियों के साथ
पर याद रखना, कोई तेरा साथ पाने को मर रहा है

निवि हर पल तेरे लिए जिया है
अब तू ही बता क्या मोहब्बत कर हमने गुनाह कर लिया

खुश रहना तू हमेशा, शायद मेरी चाहत ही कमज़ोर थी
मैं तुझे खुश रखने की कोशिश करता रहा
पर तेरी ख़ुशी कहीं और थी

हर पल जिसके साथ का सपना देखा
वो कुछ पल भी न दे सकी
फिर भी पता नहीं क्यों
आँखें किसी का होता न देख सकीं

मैंने अपना हर जन्म तेरे नाम किया है
अब तू ही बता, मैंने मोहब्बत कर क्या गुनाह कर लिया

मुलाकात

आज फिर कुछ इस कदर उनसे मुलाकात हुई
दिल मानो ठहर सा गया हो,
देखकर आँखों से आज फिर बरसात हुई

पता नहीं क्यूँआज मुझे
फिर से वो आज अपनी सी लगी
अंदाज था बदला-बदला, थोड़ी जुदा सी लगी

इस कदर बैठी सामने वो
लिपट कर जी भर कर रो लूँ
कभी न खुले आँख मेरी,
सर रखके उस पर आख़िरी बार सो लूँ
आज जिस्म से रूह फिर तार-तार हुई
आज फिर कुछ इस कदर उनसे मुलाकात हुई

चंद मिनटों की मुलाकात थी वो
फिर भी मानो यादें तमाम दे दी हो
बोल नहीं पाया कुछ भी मैं
आँखों ने जैसे हर बात कह दी हो

चलो पहचानती तो है मुझे
जिसके हर पल का मैं साया था
दे देती कुछ पल का साथ मेरा
मैं कौनसा पराया था

ये वही नूर है जिसकी, आँखों से
आँसू पोंछे थे कभी
मेरी आँखें रोती है आज,
काश ये रोने न देती कभी
आज फिर कुछ इस कदर उनसे मुलाकात हुई
दिल मानो ठहर सा गया हो,
देखकर आँखों से आज फिर बरसात हुई

वक़्त को वक़्त नहीं समझा मैंने
जहां वो दौड़ी वहीं दौड़ चला
बेइंतहा मोहब्बत थी, छोड़कर कहां जाता भला

खुशियों के पीछे भागते-भागते उसने दर्द तमाम दे दिए
वो मंज़िल की ओर थी, हमने तो रस्ते ही खो दिए
आज फिर कुछ इस कदर उनसे मुलाकात हुई
दिल मानो ठहर सा गया हो,
देखकर आँखों से आज फिर बरसात हुई

मंज़िल तमाम पा ले तू
पर मेरा मुकाम तू है
तू जिसको चाहे उसको चाह ले
मेरी आख़िरी चाहत तू है

मेरी चाहत से मेरी मुलाकात हुई
दिल मानो रूक सा गया
आँखों से फिर बरसात हुई

आज फिर कुछ इस कदर उनसे मुलाकात हुई
दिल मानो ठहर सा गया हो,
देखकर आँखों से आज फिर बरसात हुई

बेवफ़ाई

यादें

दिन ढला फिर रफ़्ता-रफ़्ता उनकी याद आई
सर था तकिये पे आँखों से आँसू की धारा बह आई
आज फिर रफ़्ता-रफ़्ता उनकी याद आई

ख़ुदा तू एक जन्म में मेरी कर दे
वादा रहा अगले जन्म में मेरी होकर आएगी
उसके लिए रोते-रोते मेरी रूह काँप आई
आज फिर रफ़्ता-रफ़्ता उनकी याद आई

कहती थी कि मैं तेरी हूँ
तो क्यों लौटकर नहीं आती
मैंने उसके लिए मारी वक़्त को ठोकर
वो क्यों मुझे वक़्त नहीं दे पाती
पुरानी यादें ताजा कर आँखें भर आई
आज फिर रफ़्ता-रफ़्ता उनकी याद आई

सच कहता हूँ खो देगी तू मुझे
फिर कोई नहीं टोकेगा
सारी आजादी होगी तुझे,
तुझे उड़ने का शौक हैं
तो शौक़ से उड़ना,
पर सोचना कभी क्या खोकर तूने उड़ान पाई
दिन ढला फिर रफ़्ता-रफ़्ता उनकी याद आई

रोते-रोते, लिखते-लिखते शाम होने को आई
दिन ढला फिर रफ़्ता-रफ़्ता उनकी याद आई

लाचार

आज उजड़े चमन की बहार देख रहा हूँ
आज मैं ख़ुद को लाचार देख रहा हूँ

अक्सर हँसने पर मुझे चुप करा दिया जाता था
आज अपनी ही आँखों में
आँसुओं का सैलाब देख रहा हूँ
आज मैं ख़ुद को लाचार देख रहा हूँ

मासूम से दिखने वाले लोग आज
पत्थर के निकल गए
कभी लगा लेते थे गले जो मुझको
आज वो क़रीब से निकल गए

बदलते उनके चेहरे के भाव देख रहा हूँ
पता नहीं कहाँ हूँ मैं और कहाँ जा रहा हूँ
आज ख़ुद का दर्द ख़ुद में ही छुपा रहा हूँ
आज मैं ख़ुद को लाचार देख रहा हूँ

मैं मीलों चला जिसके साथ
वो एक पल न चल सकी मेरे साथ
मैं हर पल रहा उसके साथ
वो क्यों नहीं हैंमेरे साथ

आज मेरे ही सवाल
और मैं ही जवाब ढूँढ रहा हूँ
आज मैं ख़ुद को लाचार देख रहा हूँ
उजड़े चमन की बहार देख रहा हूँ

ऐसा थोड़ी होता है

तुम आई, बहार आई
जिंदगी मानो खिल सी गई
एक चेहरा तुझे देख हर वक़्त हँसता है
ऐसा थोड़ी होता है

हमने साथ वक़्त गुजारा,
कई रातें साथ गुजारी
दिन भर बातें तुझसे,
रात को याद तुम्हारी
सपने मेरे, यादें तेरी,
दिल मेरा,धड़कन तेरी
ये दिल मेरा क्यों नहीं सोता है
ऐसा थोड़ी होता है

तुम आई, सपने दिखाए
वादे किए, तोड़ दिए
ऐसा थोड़ी होता है

क्या पहला क्या दूसरा
मोहब्बत में व्यापार थोड़ी होता है
ऐसा थोड़ी होता है

जो तेरे रोने से पहले रोया हो
जो तुझे सुला कर सोया हो
तेरी खुशी के लिए
जो दिन-रात दौड़ा हो
जिसने तुझे कभी
अकेला ना छोड़ा हो
आज वो ही क्यों रोता है
ऐसा थोड़ी होता है

कुछ इस क़दर तोड़ा है

उसने मुझे इस क़दर तोड़ा है
बीच रास्ते छोड़ा है

किसी के लिए कुछ भी करना
अब मेहरबानी सी लगती है
किसी से उम्मीदें
अब बेईमानी सी लगती है

उसने मेरा गुरूर तोड़ा है
मुझे बीच रास्ते छोड़ा है

भरी महफिल में भी
अब मैं उदास रहता हूँ

बैठा रहता हूँ तन से सब के पास
मन से हमेशा तेरे साथ रहता हूँ

ख़ुद की बातें ख़ुद से करता हूँ मैं
ख़ुद का दर्द ख़ुद ही सहता हूँ

बीच मझधार तूने छोड़ा है
इस क़दर मुझे तोड़ा है

तेरे चेहरे की मायूसी भी
मुझे तोड़ जाती थी

तूने मेरा हंसता चेहरा
मुरझा के छोड़ा है

मैं पतवार बना था
तेरी हर मुश्किल में

तूने मुझे बीच समुद्र छोड़ा है
तूने इस कदर मुझे तोड़ा है

याद रखना बेवफ़ा के लिए
कोई ख़ुदा का दर नहीं होता

सजती हैं महफ़िलें बाज़ारों में
ख़ुद का अपना कोई घर नहीं होता

जहाँ-जहाँ से जोड़ा मैंने ख़ुद को
तूने वहाँ-वहाँ से तोड़ा है
मुझे बीच रास्ते छोड़ा है

भुलाया नहीं जाता

समा गया है वो इस क़दर कि, जाता ही नहीं है
मैं भूलना भी चाहता हूँ
भूलाना भी नहीं चाहता
और भुलाया जाता भी नहीं है

रोज़ भीगती हैं उसकी याद में आँखें
एक वो है कि, आता ही नहीं है

सोया नहीं हूँ मैं, एक मुद्दत से
सोना चाहता हूँ
ख्वाबों में रोज़ जगा तो जाती है वो,
बस उसने सुलाया ही तो नही हैं

एक मैं हूँ जो उसके बाद भी निभा रहा हूँ
एक वो है जिसने निभाया ही तो नहीं है

मैं जो कर गुज़रा तेरे लिए,
तु उसके क़ाबिल नहीं है
तुम न कर के भी जता गए
हमने कर के भी जताया ही तो नहीं है

तेरी बहुत याद आती है

तेरी बहुत याद आती है
साथ बिताए पल याद आते हैं

तेरी बाहों में गुज़रे
वह दिन याद आते हैं

काट लेता हूँ दिन
सिगरेट के धुएँ के सहारे
पर रात गुज़र नहीं पाती है
तेरी बहुत याद आती है

तेरा वह पीछे मुड़कर
मुस्कुराना याद है
गोद में रखकर सर मेरे
तेरा वह सोना याद है

मेरे दिल की धड़कन
अब तन्हाई सह नहीं पाती है
मुरझा गया है चेहरा मेरा,
अब चेहरे पर कभी
मुस्कान नहीं आती है
तेरी बहुत याद आती है

कोई अपना अब
अपना नहीं लगता,
कोई सपना अब
सपना नहीं लगता
बैठ जाऊँ भले ही अब
भरी महफ़िल में,
सब बेनूर सा लगता है

टूट गए ज़िंदगी के सारे अरमान अब
कौन भला ज़िंदगी की फ़िक्र करता है
यादों को याद करके आंखें भर आती हैं
सुन यार, तेरी बहुत याद आती है

लौट आ किसी बहाने से

हो सके तो लौट आ किसी बहाने से
कोई टूटा है तेरे जाने से,

वीरान लगती है दुनिया सारी मुझे
कोई मतलब नहीं रहा अब जमाने से,

टूटा हूँ मैं अंदर तक, बेचैनी मुझे खाती है
हर पल यादें बन चुकी हैं, तेरी यादें मुझे सताती हैं।

मैं धीरे-धीरे रुख़सत हो चुका ज़माने से
हो सके तो तू लौट आ किसी बहाने से

ऐसे कौन किसी को तोड़ता है
बीच राह कौन किस को छोड़ता है

रूठा ही हूँ मैं तब से
छोड़ गई है तू जब से

लौट आ तु मना ले मुझको
मैं मान जाऊँगा तेरे मनाने से
हो सके तो फिर लौट आ किसी बहाने से

चल एक मुलाकात करते हैं

चल एक मुलाकात करते है
पुरानी यादों को याद करते हैं

अजनबी से बनकर मिले थे
अपनों से भी बढ़कर बन गए
बात करने से कतराते थे
अब हर पल के साथी बन गए

चल आ आज फिर बात करते है
पुरानी यादों को याद करते है

नन्हीं कली सी थी तू
चेहरे पर गज़ब का नूर था
ब्राउन ब्राउन आँखें तेरी
उनमें हल्का सा सुरूर था
तू ही है वो जिन्हें
हम हर पल याद करते हैं

चल आ फिर मुलाकात करते है
पुरानी यादों को याद करते हैं

तेरा वो पास से गुज़र जाना
पीछे मुड़ हल्का सा मुस्कुराना
तड़पा जाता हैं तेरा मुझे यूँ देख जाना
शादी के उन पलों को याद करते हैं

चल आ फिर मुलाकात करते है
पुरानी यादों को याद करते हैं
बड़ा सुहाना था शादी का वो सफर
मैंने ने जी भरकर देखा एक नज़र

स्कूल जाने से पहले तुझसे बात करना
स्कूल से आने तक का इंतजार करना
घर जाने के बाद फिर तुझसे बात करना
पल-पल हर पल याद करते है

चल आ फिर मुलाकात करते है
पुरानी यादों को याद करते हैं

नाम सा जुड़ गया था दोनों का
मेरे बिना तू अधूरी सी लगती थी
तेरे बिना मैं अधूरा सा लगता था
तू साथ थी तो हर रास्ता
मुकाम सा लगता था
तेरे से जुड़ा हर पल
मुझे पहचान सा लगता था
कुछ तो था तुझमें, कुछ तो था मुझमें
ऐसा हम महसूस करते हैं

चल आ फिर मुलाकात करते है
पुरानी यादों को याद करते हैं

याद हैं आज भी मुझे रातों को बात किया करते थे
हसीन पल थे वो जो साथ जिया करते थे
हर अल्फ़ाज़ में हम तेरा ज़िक्र किया करते थे

चल आ फिर मुलाकात करते है
पुरानी यादों को याद करते हैं

याद है वो आज भी तेरा शॉपिंग मॉल में जाना
चेहरे पर शॉपिंग की ख़ुशी फिर बच्चों सा मुस्कराना

मेरे लिए प्यारा सा अहसास था
तुझे यूँ देख पाना
चल बैठे पार्क की किसी बेंच पर
आँखों में आँखें डालकर बात करते है

चल आ फिर मुलाकात करते है
पुरानी यादों को याद करते हैं

माफ़ करना मुझे यादें ऐसी थी कि भुला ना पाया
ख़ुद को भूल गया जब तुझे भूलाना चाहा

इस जन्म में ना सही
अगले जन्म का इंतजार करते है

चल आ फिर मुलाकात करते है
पुरानी यादों को याद करते हैं

मजबूर हूँ मैं भी दिल के आगे
इसने एक न चलने दी मेरी अपने आगे
हम हर साँस के साथ तुझे याद करते है

चल आ फिर मुलाकात करते है
पुरानी यादों को याद करते हैं

मैं रो दूँगा

सता मत मुझे, मजबूर होके मैं रो दूँगा
एक दफा बोल दिया तेरा हूँ, अब तेरा होक रो दूँगा

बर्दाश्त नहीं होता मुझसे,
तुझे किसी के पास देख पाना
बिछड़ी मुझसे, तो तुझसे बिछड़के रो दूँगा

मेरे हर पल की चाहत है तू
तुझे खोने ना दूँगा

नींद भी लेगी तो ख़्वाबों में रहूँगा तेरे
पर अकेला तुझे सोने ना दूँगा

तू रोयेगी तो, संग रो दूँगा तेरे
अब अकेले तुझे रोने ना दूँगा

मर जाऊंगा तुझसे बिछड़ने से पहले
तुझे मैं खोने ना दूँगा

सुन, मुझसे दूर जाने की यूँ ज़िद न किया कर
मासूम है दिल मेरा, ज़ख्म ना दिया कर

प्यार तो मैं भी करता हूँ तुझसे
कहूँ तो मान लिया कर

इश्क़ के चर्चे सरेआम कर दूँगा
सता मत मुझे, मैं मजबूर होके रो दूँगा

काश दोबारा मिल जाती

काश दोबारा मिल जाती तू
अंधेरी सी ज़िंदगी में फिर उजाला लाती तू

तुझे गए एक अरसा हो गया है
तब से निवि कहीं खो सा गया है

कहाँ गए वो दिन,
जब मुलाकातें होती थी
सुबह शाम हमारी बातें होती थी

फिर से तेरा हर वादा दोहराती तू
काश दोबारा मिल जाती तु

याद है तुझे,
बात करते-करते तेरा सो जाना
मैं कहता नींद आ रही है तुझे
और तेरा मुकर जाना

फिर से बच्चों सी आवाज़ में
वो गीत सुनाती तू
काश दोबारा मिल जाती तू

मैं अब वो नहीं,
जो हँसाता था ज़माने को
अब ख़ुद का चेहरा देख आईने में
ख़ुद ही तरसता हूँ मुस्कराने को

ये सितम हम पर नहीं करना था
ज़माना पड़ा था आज़माने को
बेजान पड़े इस चेहरे पर
फ़िर से नूर लाती तू
काश दोबारा मिल जाती तू

तुमने मुझे मरते नहीं देखा हैं
ख़ुद से ही रोज़ लड़ते नहीं देखा हैं

जाने से पहले,
काश मुझे जान जाती तू
बिन तेरे साँसें
अटकती है हलक में मेरे
ये पहचान पाती तू
काश दोबारा मिल जाती तू

मोहब्बत के नाम पर

मोहब्बत के नाम पर मुझे आजमाया गया,
जहाँ तक थी जरूरत उसको,
वहाँ तक निभाया गया।

मैं समझता रहा मुकद्दर अपना जिसको,
मैं वहीं से ठुकराया गया,
मोहब्बत के नाम पर मुझे आजमाया गया।

तेरे हर वादे को हम सच जान बैठे,
तुझे हम अपना मान बैठे,
भूल से भी ऐसी भूल ना हो,
ऐसे मुझे भुलाया गया,
मोहब्बत के नाम पर मुझे आजमाया गया।

मैं आँखें बंद कर दौड़ा, इश्क़ के भँवर में,
कभी खोट देख ही नहीं पाया, उसकी नज़र में।

फ़िर ख़ुद की ही नज़रों में मुझे गिराया गया,
मोहब्बत के नाम पर मुझे आजमाया गया।

ना उम्मीद से हम उम्मीद लगा बैठे,
कुछ पाने के चक्कर में, अपना सब खो बैठे।

इश्क़ बुरा है निवी, सुना था,
इतना बुरा है, ये अब जान बैठे।

सच्चे इश्क़ का अंजाम समझाया गया,
मोहब्बत के नाम पर मुझे आजमाया गया।

नहीं सोचा,
ये होगा अंजाम मेरा
नहीं देख पाया था,
नक़ाब के पीछे छुपा चेहरा तेरा।

लोग आज भी पूछते हैं, वो कैसी है?
क्या है उस से रिश्ता तेरा?

कह दो उन से खिलौना था वो मेरा,
मेरी मर्ज़ी से जिसको खिलाया गया,
मोहब्बत के नाम पर मुझे आजमाया गया।

लिबास की तरह मोहब्बत बदलने वाले,
इश्क़ नहीं जानते,
इश्क़ की मौत वो नहीं पहचानते।

रानी थी वो इश्क़ के शतरंज की,
हमें प्यादा बनाया गया,
मोहब्बत के नाम पर मुझे आजमाया गया।

बनाया है उसने मुझे कुछ ऐसा,
बनना नहीं चाहता था कभी जैसा,
मोहब्बत मेरी,
बिस्तर किसी ओर के लिए सजाया गया,
मैंने किया था इश्क़-ए-इज़हार जहाँ से,
वहीं जाकर मुझे जलाया गया,
मोहब्बत के नाम पर मुझे आजमाया गया।

न कल हम उनको भूले थे,
न आज उनको भूले है,
न ही हमसे भुलाया गया,
साथ रहने का था जो वादा तुझसे,
वो तेरे बाद भी निभाया गया,
मोहब्बत के नाम पर मुझे आजमाया गया।

मोहब्बत में व्यापार

हम मोहब्बत में व्यापार नहीं करते
हमारे जैसा हम ही कर सकते हैं

यूँ हर रोज़ हम ही मर सकते हैं
हम किसी पर अत्याचार नहीं करते
हम मोहब्बत में व्यापार नहीं करते

तूने हमारा गुरुर तोड़ा हैं
हमें बर्बादी की ओर मोड़ा हैं

रानी की तरह की थी हिफाज़त, जिसकी मैंने
जिस्म की भूख ने उसको आज, बर्बाद कर छोड़ा हैं

तु गिर सकती है, उतना हम गिर नही सकते
हम मोहब्बत में व्यापार नहीं करते

ख़बर

अब हमारी ख़बर नहीं रखती है,
मोहब्बत के नाम पर वो कितना कुछ करती है।

जिसने गुज़ारी थीं रातें हमसे बात करके,
वो बातें अब किसी ओर से करती है,
मोहब्बत के नाम पर वो कितना कुछ करती है।

हमको ज़िंदगी गुजारने के सपने दिखाए गए,
मेरी मोहब्बत के घर खतों से सजाए गए।

'मैं तुम्हारी हूँ, तुम्हारी रहूँगी'
उसकी ये बात आज भी मुझे परेशान करती है,
मोहब्बत के नाम पर वो कितना कुछ करती है।

उसके लिखे झूठे खत मैंने संभाल रखे हैं।
कितने वहम मैंने आज भी पाल रखे हैं।

मुझ से किए वादे वो अब किसी ओर से करती है,
मोहब्बत के नाम पर वो कितना कुछ करती है।

कोई कहना उसको,
ज़िंदगी देने वाले की ज़िंदगी उजाड़ा नहीं करते,
छूट जाए ज़िंदगी की उम्मीद, इस कदर तोड़ा नहीं करते।

यक़ीन नहीं होता आज भी मुझे,
किसी की मोहब्बत इस कदर भी गिरती है।

मोहब्बत के नाम पर वो कितना कुछ करती है,
अब वो हमारी ख़बर नहीं रखती है।

इश्क़ मुझे समझाते हो क्या

तुम कभी जताते हो क्या
मैं तेरा, तू मेरी,
बातें बनाते हो क्या
तुम कभी हद से गुजर जाते हो क्या
इश्क़ मुझे समझाते हो क्या

तुम रात को छुप-छुप कर रोए हो क्या
आँखों में नींद भरी हैं, सो नहीं पाए हो
ऐसे कभी सोए हो क्या

भरी भीड़ में भी तन्हा रहो
खुशियों में भी कभी रो के आए हो क्या
सुनो तुम उसको भूला पाते हो क्या
इश्क़ मुझे समझाते हो क्या

यादों का क्या किया जाए

ये जो तुम साथ नही होकर भी साथ हो ना
खुली आँखों का जो ख्वाब हो ना,
इनका क्या किया जाए?

जो रहा नहीं तेरे बिना एक पल,
वो अब बिन तेरे जिंदगी गुजारे कैसे?

जब टूट कर बिखरे हर रात,
तो ख़ुद को संभाले कैसे?

बता यादों के सहारे जिया कैसे जाए,
इन यादों का क्या किया जाए?

अमृत की थी आस जिस से,
उसने ज़हर पिलाया है।
सुर्ख पड़ चुकी हैं आँखें,
सुख चुके हैं आँसू
इतना रुलाया है।

ये ज़हर का घूँट कैसे पिया जाए,
यादों का क्या किया जाए?

उसका किया हर वादा याद आता है,
फिर जो किया उसने साथ मेरे,
वो इरादा याद आता है।

जीना है ताउम्र बिना उसके,
जिसके बिना एक पल जिया ना जाए,
इन यादों का क्या किया जाए?

बदले बदले तेवर

झूठ बोलकर मुझे समझाया जा रहा था
मैं कुछ नहीं जानता हो जैसे
इस तरह सब कुछ बताया जा रहा था।

वो जो सालों से थे झूठे साथ मेरे
उनको सच्चा बताया जा रहा था।

बदले बदले से रहने लगे हैं तेवर उनके
दिल की सिहरन बता रही है मुझे
कोई तो है जो उनके करीब आ रहा था।

मेरे कांपते हाथ दे रहे हैं गवाही
उसके बेवफ़ाई की
वो जा चुका ना जो जा रहा था।

अब समझ पाया हुँ
क्यों अक्सर बीमार रहता हुँ मैं
वो एक मुद्दत से मेरी झूठी कसमें खा रहा था।

झूठे ख़त

मैं पढ़ा दूँ, उसके लिखे ख़त आपको
झूठ ऐसे भी लिखा जाता है
तब जान पाओगे, अगर मैं दिखा दूँ
उसके ख़त आपको

वो जो लिखा था, झूठ उसने हर पन्ने पर
उन्हीं ख़तों को पढ़ता हूँ मैं, रात को

मैं ही नही था, इश्क़ में गुनहगार
वो भी कैसे तरसती थी, एक मुलाक़ात को

असल जिंदगी में ऐसा कुछ नहीं किया उसने
जैसे ख़त में लिख रखा था हर एक बात को

ऐसा शख्स भी भला ऐसा कर सकता है
कोसोगे तुम अपने आप को
अगर मैं दिखा दूँ उसके लिखे ख़त आपको

आँखें आज भी यक़ीन नहीं कर पाती हैं
कैसे कोई इस क़दर बदल जाती हैं

ये जो तुम देख रहे हो मेरा मायूस चेहरा
कभी ये भी मुस्कुराता था

यादें उसकी जा नहीं रही
मैं ख़त्म करता हूँ रोज़ अपने आप को
अगर मैं दिखा दूँ उसके लिखे ख़त आपको

ज़िंदा नही पर ज़िंदा हूँ
मैं तेरे किए पर शर्मिंदा हूँ

अब जब भी मुझसे कोई पूछे हाल मेरा
तो यही पूछना
कैसे संभालते हो अपने आप को
अगर मैं दिखा दूँ उसके लिखे ख़त आपको

बेशर्म

बेशर्म है, नए आशिक़ को
वफ़ा के क़िस्से सुनाती है
वो अब भी मन्दिर जाती है

जो किए थे वादे उसने मुझ से
वो उसके साथ निभाती है
डूब जाना था उसको शर्म से
शर्म! ये उसे कहाँ आती है
सुना है वो अब भी मंदिर जाती है

थमा गई जो हाथ में सिगरेट मेरे
वो उसको सिगरेट के नुकसान बताती है
जो निकलती थी घर से कभी हम से पुछकर
अब वो उस से पुछकर घर से जाती है
सुना है वो मंदिर जाती है

कहती थी किस्मत वाली हूँ तुम मिले हो
ये बातें अब उसको भी दोहराती है
हमें था जिसके सर पर ओढ़े दुपट्टे से प्यार
वो उसके लिए अब बिस्तर सजाती है
सुना है वो अब भी मंदिर जाती है

झुकती नहीं थी जो पलकें मेरे इंतज़ार में
वो अब नज़रें नहीं मिलाती है
वो अब भी मंदिर जाती है

मेरा भरोसा

मेरा भरोसा तोड़ने वाली
गैरों से रिश्ता जोड़ने वाली
तुझे अपनों से भी अपना माना था
तुझे ऐसा तो नहीं जाना था

दुःखता है मुझे मेरा यूँ बिखर जाना
गैरों के लिए तेरा निखर जाना
मुझे ग़मो के साए में मोड़ने वाली
मेरा भरोसा तोड़ने वाली

इतना मेरे करीब नहीं आना था
आ ही गई जब करीब मेरे
इस क़दर नही जाना था
मेरा भरोसा तोड़ने वाली

झूठी क़समें खाने वाली
शिवलिंग पर जल चढ़ाने वाली
गैरों के बिस्तर सजाने वाली
मेरा भरोसा तोड़ने वाली

आइने के सामने कम जाता हूँ

मैं आइने के सामने, अब कम जाता हूँ
मैं निहारता था ख़ुद को, तेरा पाकर
हर रोज़ आइने के करीब जाकर

वो जो ली थी तस्वीर,
आइने में अपनी, सामने मेरे
जाती नहीं है अब, वो जहन से मेरे

जब भी खड़ा होता हूँ मैं,
आइने के सामने
ख़ुद को अकेला पाता हूँ
मैं आइने के सामने अब कम जाता हूँ

मैं मेरे बिखरे बाल,
अब नहीं बनाता हूँ
बिना आईना देखे चला जाता हूँ

पूछता है जब मुझसे कोई
ये क्या हाल बना रखा हैं
मैं बीमार होने का बहाना बनाता हूँ
मैं आइने के सामने अब कम जाता हूँ

एक मौत ऐसी भी

आँखों में नींद है पर सो नहीं पाता हूँ
सुबह होने का इंतजार करता हूँ
मैं हर रोज़ मरता हूँ

काँपने लगे हैं अब हाथ मेरे
टूट चुका हूँ मन से

ख़ुद को अब
मज़बूत कहने से डरता हूँ
मैं हर रोज़ मरता हूँ

विश्वास में लेकर किसी ने
तोड़ा है विश्वास मेरा

मैं अब यकीन करने से डरता हूँ
किसी का सच भी
अब सच नहीं लगता मुझे

मैं ख़ुद पर भी भरोसा
अब नहीं करता हूँ
मैं हर रोज़ मरता हूँ

मैं दौड़ा हूँ
मंजिल मान किसी को, आँख बंद करके
छोड़ धूप-छाँव, शाम एक करके

डरने लगा हूँ इश्क़ वाली बातों से
हसीन सुबह, यादगार दिन, उन लंबी रातों से

अब ख़ुद की बातें ख़ुद से करता हूँ
मैं हर रोज़ मरता हूँ

साथ बिताए पल, तेरे लिखे खत,
तेरे झूठे वादे, तेरी झूठी क़समें

तेरा साथ मंदिर जाना,
तेरी वो जन्मों-जन्मों की रस्में

जी भर के रोता हूँ,
जी भर के तुझे याद करता हूँ
मैं हर रोज़ मरता हूँ

ऐसा कोई दिन नहीं जाता
ऐसी कोई रात नहीं जाती
जिसमें तेरी याद नहीं आती
मैं छुप-छुप के रोता हूँ

ज़रा-ज़रा ख़ुद को
हर रोज़ खोता हूँ
तुम्हे बहुत मिस करता हूँ
बहुत मिस करता हूँ
मैं हर रोज़ मरता हूँ

कभी नहीं जाने वाले थे

वो जो कभी नहीं,जाने वाले थे
वो जो तुम्हारे क़रीब, आने वाले थे

हर पल साथ, निभाने वाले थे
लड़ते रहते थे ना तुम, उसके लिए सब से
जिसके साथ जीने के, सपने पाले थे

भूल गए ना वो तुमको
जो नहीं भुलाने वाले थे

कब तक निभाता निवि, बेवफ़ा से वफा
वो हर किसी पर मर जाने वाले थे

आज भी नहीं होता यकीन मुझको
सच में चल गए क्या वो
जो कभी नहीं जाने वाले थे

तेरे बिना

तेरे बिना भी मैं, तुझसे ही प्यार करता हूँ
रोज़ टूटता हूँ, रोज़ ख़ुद को जोड़ता हूँ

ऐसा एक पल नहीं, कि तुझे याद नहीं करता हूँ
तेरे बिना भी मैं, तुझसे ही प्यार करता हूँ

हाँ, अब हँसने को मन नहीं करता
अब ख़ुद की भी मैं, फ़िक्र नहीं करता

मर सा गया हूँ अंदर से,
मैं डर सा गया हूँ अंदर से
मैं किसी पर अब भरोसा नहीं करता हूँ
तेरे बिना भी में तुझसे ही प्यार करता हूँ

रोज़ भीगती है आँखें मेरी
खुल कर हँसे, अब जमाना हो गया
साथ बिताए पल, याद आते हैं
तेरे किए वादे याद आते हैं

अपना प्यार आज फ़साना हो गया
जो तुझसे था, वो तुझसे ही है
कब कहाँ किसी से करता हूँ
तेरे बिना भी मैं, तुझसे ही प्यार करता हूँ

तेरे लिखे ख़त, आज भी पढ़ता हूँ
जो देखे थे साथ सपने
आज उनको अकेले गढ़ता हूँ

साथ देखे थे कभी जीने मरने के सपने
पर हर रोज़ आज मैं अकेला मरता हूँ
तेरे बिना भी मैं, तुझसे ही प्यार करता हूँ

मन से हार जाना

आपने मन से हारा इंसान
देखा है क्या?
मन से वो जब हार जाता है

अच्छा अच्छा कह कर,
जब कोई बुरा बना जाता है
आपका किया हर वादा
जब याद आता है

कहनी हो जब दिल की बातें उसको
कह नहीं पाता है
मन से जब वो हार जाता है

वो जो बनाने चला था,
जिसको ज़िंदगी का हिस्सा
वो ही ज़िंदगी खत्म कर जाता है

तुमने किया कुछ यूँ सितम उस पर
अब वो घर नही जाता हैं
मन से जब वो हार जाता है

तुम्हारे चेहरे की मायूसी
नहीं थी, गंवारा जिसको
वो अब कभी हंस नहीं पाता है
मन से जब वो हार जाता है

अब वो शहर कैसा है?

बता वो शहर कैसा है?
जहाँ रह कर पहली दफ़ा तुझे पाया था
जहाँ तेरे लिए किसी को ठुकराया था

जहाँ जाने की कभी, ज़िद थी तेरी
मैंने वहाँ तुझे पहुँचाया था

कितने ही ख़्वाब हमने वहाँ के सजाए थे
याद है, जब पहली बार तुम,उस शहर में आए थे

तुम इतने सस्ते थे, यहाँ आने पर पता चला
हम तुम्हें ख़ामख़ाँ महँगा आँकने लगे

हमसे पूछती,
हुस्न की कीमत तुम्हारी
तुम तो कौड़ियों में बाँटने लगे

तु पूछती थी ना वो झूठ में हाल मेरा
निवि कैसा है
छोड़ ना ये फ़िज़ूल की बातें तेरी
कोई कभी ना बने अब वो वैसा है

मेरा नहीं रहा उस शहर से वास्ता अब कोई
तु बता अब वो शहर कैसा है

किस क़दर तोड़ा होगा

भरोसे से दूर दौड़ता वो शख़्स,
भरोसे से कितनी दूर तेरे साथ दौड़ा होगा
तू सोच तूने किस क़दर, उसको तोड़ा होगा

मंज़िल मान तुझे जिसने, सफर नहीं देखा
बदक़िस्मती है तेरी ऐ बेख़बर,
तूने उसका सफ़र नहीं देखा

बीच रास्ते छोड़ा तूने उसको,
कैसे उसने ख़ुद को मोड़ा होगा
तू सोच तूने किस क़दर, उसको तोड़ा होगा

तेरे साथ सुबह, शाम, तेरे साथ जिसकी रात होती थी,
हसीन मुलाकातें घंटों बात होती थी

जिंदगी भर साथ रहने के वादे
मेरे वादों में तू भी साथ होती थी

झूठे तेरे वादे ,झूठी तेरी क़समें
तूने तो कहीं का नहीं छोड़ा होगा
तु सोच तुने किस क़दर, उसको तोड़ा होगा

पागलपन की हद

मेरे पागलपन की हद जानते हो
क्या तुम अब भी, मुझे पहचानते हो

जो किया है, तुमने मेरे साथ
तोड़ा है तूने मेरा, हर एक ख़्वाब

जो देकर गए हो, दर्द तुम मुझे
उसकी दवा जानते हो

वो जो मौत मर चुका हूँ मैं
वो मैं ही जानता हूँ

तुम नादान हो
मुझे ज़िंदा मानते हो
क्या तुम अब भी, मुझे पहचानते हो

मैंने क्या हारा है?

हमने क्या हारा है
तेरे जाने के बाद ज़िंदा, ख़ुद को हारा है
मेरा अब सबसे किनारा है

ना मैं ख़ुद को, ख़ुद प्यारा हूँ अब
ना तेरे बाद मुझे कोई प्यारा हैं
तेरे जाने के बाद मैने, ख़ुद को हारा है

अब अच्छा लगता हैं, मुझे सबसे दुर रहना
तेरी यादों में मजबूर रहना

अब मेरी एक अलग दुनिया है
जिसमें रहती है सिगरेट, हमेशा साथ मेरे
ना गुजरने वाला मैंने वक़्त गुजारा है

मौत से भी मैं, मौत मांगता हूँ
इस कदर तुने मारा है

मैं अब मैं नहीं, मुझ में अब कुछ नहीं
तुझे हार कर मैंने दुनिया को हारा है
ये मत पूछना कभी मैंने क्या हारा है

जाना ज़रूरी था क्या?

ये जो तुम कर के गए हो
कर जाना ज़रूरी था क्या?
हर किसी पर यूँ मर जाना ज़रूरी था क्या?

कर के किसी से उम्र भर के वादे
यूँ मुकर जाना ज़रूरी था क्या?

तुम गैरों की बाहों में लिपटकर
जो ये मुस्कान लिए फिरते हो
छीन कर किसी के चेहरे का नूर
यूँ मुस्कराना ज़रूरी था क्या?

बीच राह जो छोड़ जाना था तुझको
तो ज़िंदगी में आना ज़रूरी था क्या?

तु कहती थी ना मुझसे, मेरे जैसा कोई नही
मेरी नजरों में यूँ गिर जाना ज़रूरी था क्या?

हम तुझे हँसाने के लिए रोए है अकेले में
तुझे यूँ रुलाना ज़रूरी था क्या?

मैंने खो दिया ख़ुद का वजूद अपना
तोड़ कर गई है तु मेरा हर सपना
अंधेरों की दुनिया में मुझे मोड़ जाना ज़रूरी था क्या?

यूँ ही चले जाना था एक रोज़ मुझे
तेरा यूँ छोड़ जाना ज़रूरी था क्या?

तुम याद आने वाले हो

करता हूँ, कोशिशें तुझे भूल जाने की
कभी किसी से इश्क़ ना कर पाने की

बुरी लगने लगी हैं मुझे, महफिलें ये ज़माने की
तुम ज़हन से मेरे नहीं जाने वाले हो
तुम याद आने वाले हो

मैं जब भी पढ़ता हूँ लिखे, ख़त तेरे
याद आते हैं साथ बिताए पल मेरे

वो जन्म जन्मों तक साथ वाली बात
वो प्यार भरी बातें तुम्हारी,
आँसुओं में बहते वो जज़्बात

भूल गया था मैं, तुम मन बहलाने वाले हो
ताउम्र तुम दिल से नहीं जाने वाले हो
तुम बहुत याद आने वाले हो

ये जो बड़ा इश्क़ इश्क़ करते हो

ये जो तुम बड़ा इश्क़ इश्क़ करते हो,
कुछ पाकर आए हो क्या?

जहाँ हद की भी हद होती है,
हम गुजरे हैं वहाँ से,
तुम गुज़र आए हो क्या?

महफ़िलें भी जहाँ वीरान लगें,
लोगों से भरा शहर भी, तुमको सुनसान लगें,
वहाँ जाकर आए हो क्या?

तुम्हारी ही मोहब्बत तुमसे बगावत करे,
तुमसे बिछड़ कर नये आशिक़ से दावत करे,
वहाँ से गुज़र आए हो क्या?

भर के रखी थी जो इश्क़ की तिजोरी,
वो लुटा आए हो क्या?

हम गुज़रे हैं वहाँ से
तुम गुज़र आए हो क्या?

काश क़द्र करना सीख जाती

थोड़ा सब्र करना सीख जाती
काश क़द्र करना सीख जाती

हम रोज़ रोज़ नहीं आने वाले
एक रोज़ है हम जाने वाले

हमको यूँ रुला कर नहीं जाती
काश क़द्र करना सीख जाती

तुझे क्या पता हम कितना रोते हैं
पूछती तो सही हम कितना सोते हैं

मैं ज़रा-ज़रा रोज़ मरता हूँ, यादों में तेरी
देखता हूँ जब जब हँसती तस्वीर तेरी
भीग जाती हैं ये आँखें मेरी

बेशर्मी का ओढ़ रखा है, चोला तुमने
काश थोड़ी भी तुझे ,शर्म आती
तो तु क़द्र करना सीख जाती

भ्रम

आप गलत हो गए हो
किसी का साथ देने की जिद्द में,
खुद अकेले रह गए हो।

लोगों ने कहा गलत है वो,
तुमने कहा सही है वो,
सही गलत की लड़ाई में,
तुम खुद ही गलत हो गए हो।

उनका क्या?
मंजिल पार ले जाना चाहता था,
जो कश्ती तुम्हारी,
खुद ही वो बीच भंवर रह गए हो।

लड़े हो कभी अपनों से,
उसको अपना कहने के लिए,
आज उसी के लिए पराए हो लिए हो।

जो तुम्हें कभी ना रुलाने की देती थी ना कसमें,
क्या हुआ निवि?
आंसू सुख गए, या जी भर के रो लिए हो।

फितरत कभी नहीं बदलती,
अब ये दावे से कहता है निवि,
अभी भी भ्रम में हो, या जग लिए हो।

अपने आप से हारा हूँ

मैं तो अपने आप से हारा हूँ
डूबती कश्ती का मैं आख़िरी किनारा हूँ

ये जो मैं हूँ ना अभी,
ये मैं होना नही चाहता
नींद भी नही आ रही है मुझे,
मैं सोना भी नहीं चाहता

वो जो मैंने माँगी थी न,
मंदिरों में दुआ जिसके लिए
मैं उसी का मारा हूँ
मैं अपने आप से हारा हूँ

छत पर लगा पंखा कुछ ही दूरी पर है मुझ से
रोकता हूँ ख़ुद को हर रोज़ मैं
मेरे माँ-बाप का मैं आख़िरी सहारा हूँ

मैं उसी का मारा हूँ
मैं अपने आप से हारा हूँ

एक रोज़ मरने वाले

जो हो ख़ुद को कौड़ियों में बाँटने वाले
तुम कौन हो उनको डाँटने वाले

कब तक सँभालते तुम आबरू उनकी
फ़ितरत हो मुँह मारना जिनकी

वो जो थी जान चुके थे उनको, जानने वाले
तुम थे अंधे इश्क़ में निवि
तुम कहाँ थे मान ने वाले

कहते थे ना जो तुम से, कि वो झूठी हैं
सच कहते थे वो कहने वाले

तुम देख नहीं पाये
नक़ाब के पीछे, छुपा चेहरा उसका
पहचान गए थे, पहचानने वाले

शर्म से आँखें झुकने का एहसास क्या जाने
हर किसी पर आँख मारने वाले

वफ़ा की क़ीमत, वफ़ादार ही जाने
हर रोज़ मरते हैं, एक रोज़ मरने वाले

जो हो ख़ुद को कौड़ियों में बाँटने वाले
तुम कौन हो उनको डाँटने वाले

तुझे जानना है क्या

तुझे जानना है क्या
तेरे बाद मैं क्या करता हूँ
थोड़ा थोड़ा रोज़ ख़ुद को ख़त्म करता हूँ

जब जब उठती है तेरी यादों की तलब
सिगरेट पर सिगरेट ख़त्म करता हूँ

जिस मौत से डरता है न ये जहां
मैं वो मौत हर रोज़ मरता हूँ

तुझे जानना है क्या
तेरे बाद मैं क्या करता हूँ

तेरे लिखे रोज़ ख़त पढ़ता हूँ
सपनों में इश्क़ की दुनिया गढ़ता हूँ

मैं आज भी वहीं हूँ
जहाँ तुम छोड़ कर गए थे

संभल ना पाऊँ कभी
इस क़दर तोड़ कर गए थे

मैं ख़ुद से ख़ुद ही रोज़ लड़ता हूँ
तुझे जानना है क्या
तेरे बाद मैं क्या करता हूँ

जो मुझ पर गुज़री है, वो किसी पर ना गुजरे
ख़ुदा से दुआ करता हूँ

तुझे जानना है क्या
तेरे बाद मैं क्या करता हूँ

दाग़दार दामन

तुम दामन दाग़दार लिए, फिरती हो
लानत है तेरी इन ख़ूबसूरत आँखों पर
हर किसी का इनमें, दीदार लिए फिरती हो

हमने अमानत समझ की थी, जिस जिस्म की पैरवी
सुना है उसे तुम, बाजार में लिए फिरती हो

मंदिर ले जाने वाले तुझे बुरे लगने लगे
जिस्म नोचने वालों को तुम अपना समझने लगे

बेवफा होकर वफ़ा की तलाश में फिरती हो
मैं जिस इश्क़ की देता था दुहाई महफ़िलों में
तुम उसे नीलाम किए फिरती हो

शर्म भी शरमा जाए जो तुमने किया है
वो करने में भला
बड़ी बुज़दिल हो, ये सब कैसे करती हो
तुम दामन दाग़दार लिए, फिरती हो

बर्बाद

तुझसे ऐसा बँधा
सब से आज़ाद हो गया

जब से गए हो छोड़कर तुम मुझे
आधा कुछ नहीं बचा मुझमें
सब बर्बाद हो गया

ख़ुशियाँ हैं कि आती ही नहीं
ग़मों का पूरा अंबार हो गया

जिसमें थी सबको जोड़कर रखने की ताक़त
ख़ुद ऐसा टूटा कि तार-तार हो गया

हम भी महफ़िलों की शान हुआ करते थे कभी
ग़लती ये रही गलत लोगों से प्यार हो गया

गिरे वो थे हमारी नज़रों से
झूठा ये संसार हो गया

मैं रो देता हूँ जब कोई कहता है अब
भाई मुझे प्यार हो गया

रोज़ रोज़ थोड़ी आएँगे

जो बातें होती थीं तुझसे,
वो तुझसे ही, होती थीं।
सबको बतियाने थोड़ी आएँगे,
हम यहाँ रोज़ रोज़ थोड़ी आएँगे।

तुझसे मिला,
तो मैं तुझसे ही मिला हूँ।
हर किसी से मिलने थोड़ी जाएँगे।

तेरे वादे तेरे बाद भी मेरे हैं,
तुम तो हो आए सारे जहाँ के,
हम तो आज भी तेरे हैं।

जहाँ जाना था जा चुके हम,
इससे आगे कहाँ जाएँगे।
हम यहाँ रोज़ रोज़ थोड़ी आएँगे।

इंतजार की इंतहा

तु कब किसी के लिए वफ़ादार रही है
तु कब किसके, साथ रही है

किसी के साथ दिन,
तो किसी के साथ रात रही है

तु क्या समझेगी इंतज़ार की इंतहा
तेरी तो हर एक से मुलाक़ात रही है

मेरे से पहले किसी के साथ
किसी के साथ मेरे बाद रही है

खेल बना रखा है इश्क़ को तूने
कब किसकी खाई क़समें
तुझे कहाँ याद रही है

मैंने मिटा दी लिखी हुई,
मुलाक़ातों की तारीखें
जब लोगों ने कहा
इस से हमारी भी मुलाक़ात रही है
तु कब किसके, साथ रही है

किसी एक के हो जाते तुम

हम जहाँ तक गये इश्क़ में
वहाँ तक हो आते तुम

काश किसी एक के हो जाते तुम
अपनी हरकतों से बाज़ आते तुम

मैं पत्थर नहीं था, तुम तोड़ते चले गए
हर किसी के लिए मुझे छोड़ते चले गए

बहुत कुछ कहना था तुम से
दिल की आवाज सुन पाते तुम

हम जहाँ तक गये इश्क़ में
वहाँ तक हो आते तुम

मैं बुरे वक़्त में साथ रहा तेरे
मेरे लिए ये बुरा वक़्त तो न लाते तुम

मैं चलना चाहता था, हर कदम पर साथ तेरे
एक कदम तो साथ आते तुम

वापस अकेला कैसे लौटूंगा
जाने से पहले इतना तो कर जाते तुम

जहाँ से चला था साथ तेरे
वहाँ तो छोड़ आते तुम

हम जहाँ तक गये इश्क़ में
वहाँ तक हो आते तुम

ये दिन भी आने वाला है

सोचा नहीं था, ये दिन भी आने वाला है
कोई इस क़दर,जाने वाला है।

तेरे धोखे से वाक़िफ़ नहीं था मैं
कि तु धोखा देकर जाने वाला है
मुझे लगा था ये निभाने वाला है।

आज की ख़ुशी में, कल नहीं देख पाया मैं
सोचा नहीं ऐसा कल आने वाला है।

जिसे मैं कहता रहा अपना अपना
वो मुझे इस क़दर पराया बनाने वाला है।

खुश ना हो तुम मुझे बर्बाद करके
वो सबका हिसाब रखता है।

नंबर तेरा भी आने वाला है
ये दिन भी आने वाला है।

मेरा अब सहारा कौन है

तुम जीत गए क्या!
हम से बिछड़ के
तो फिर हारा कौन है

तुमने जाना है क्या
कभी हाल मेरा

जो करता था ना
तुझसे बातें रात भर
वो एक मुद्दत से मौन है

ये भी प्यारा वो भी प्यारा
छान आए न ख़ाक़ ज़माने की
अब तो बता दे प्यारा कौन है

तुम जीत गए क्या!
हम से बिछड़ के
तो फिर हारा कौन है

मुझे लौटा सकती हो क्या

मुझमें मैं नहीं रहा
मुझे लौटा सकती हो क्या

जो लिखे पड़े हैं तेरे वादे ख़तों में
वो निभा सकती हो क्या

मैं हँसना चाहता हूँ पहले की तरह
तुम हँसा सकती हो क्या

ये जो दर्द में, मैं हूँ न
ये क्यों हूँ मैं नहीं बता सकता
तुम बता सकती हो क्या

मुझमें मैं नही रहा
मुझे लौटा सकती हो क्या

मेरी मायूसी बयाँ करती है अब हाल मेरा
मैं नहीं छुपा सकता
तुम छुपा सकती हो क्या

मेरी मुझसे ही अब लड़ाई हैं
मेरी हर साँस अब पराई हैं

दिल कहता है धड़कन से मेरी
मैं नहीं भुला पा रहा
तुम भुला सकती हो क्या

मुझमें अब मैं नहीं रहा
मुझे लौटा सकती हो क्या

दिल से उतर गए

जिनके बिना कटता नहीं एक पल
उसके बिना साल गुज़र गए

दिल पर कभी थी हुकूमत जिनकी
इतना गिरे के दिल से उतर गए

हम मंज़िल मान कर रहे थे,
इंतज़ार किनारे पर
कभी ना मुकरने वाले थे ना जो
वो रास्ते में ही मुकर गए

पिरोया था जिन मनकों को
विश्वास के धागे में मैंने
विश्वास टूटा की सब बिखर गए

पूछते हैं मुझसे अब मेरे ही कुछ अपने
जो कभी नहीं जाने वाले थे न
आजकल वो किधर गए

जिनके बिना कटता नहीं एक पल
उसके बिना साल गुजर गए

क़समें खा कर गया है

वो हमारी जवानी खा कर गया है
मैं उसे पाना चाहता था
वो मुझे पूरा पाकर गया है

ये जो मैं खड़ा हूँ ना
बर्बादी के रास्ते पर
वहाँ मुझे वो लाकर गया है

तुम नए नए आशिक़ जो
देते हो ना क़समें साथ रहने की
वो मेरी क़समें खा कर गया है

जिस मंदिर में मैंने माँगा था ना उसे
वहाँ मैं अकेला नहीं गया
वो मेरे साथ आ कर गया है

मैं उसे पाना चाहता था
वो मुझे पूरा पाकर गया है

शिकायत

तेरी इन आँखों पर मुझे लानत रहेगी
तू न मोहब्बत कर सकेगी किसी से
न किसी की अमानत रहेगी

जो थी ना मोहब्बत तुझे मुझ से
वो आज किसी और से है
परसों किसी और से रहेगी

फ़रेब करना आदत है तेरी
साथ में मेरे अच्छा
मेरे बाद मुझे बुरा कहेगी

ये जो लगते हैं न आँसू तुझे अभी तमाशा
ये हमारी आँखों से है
तेरी आँखों पर गुजरी, तो कितना सहेगी

तुमने बनाया है हमारी ज़िंदगी को जहन्नम
ताउम्र तुम से ये शिकायत तो रहेगी

मेरा दर्द

तुम मेरा दर्द थोड़ी समझ सकते हो
जिनसे थी मरहम की उम्मीद
वो घाव देकर गए हैं
तुम वो घाव थोड़ी भर सकते हो

ना उम्मीद से भी कर ली थी उम्मीद हमने
तुम वो उम्मीद थोड़ी कर सकते हो

नफ़रत के भी क़ाबिल नहीं थी वो
जिनसे हम प्यार करते हैं
तुम ये थोड़ी कर सकते हो

कहने को मरता है, शख्स ज़माने में एक बार
हम तो, रोज़ मरते हैं, तुम थोड़ी मरते हो

बिखर जाने दो

मैं बिखरा हूँ
मुझे बिखर जाने दो

मैंने बिठा रखा था पलकों पर जिनको
वो नज़रों से गिरे हैं
गिर जाने दो

जिनका हो जगत के दिलों में बसेरा
वो उतर रहे हैं दिल से
उतर जाने दो

मैं बिखरा हूँ
मुझे बिखर जाने दो

इधर वफ़ा का रास्ता आता है
नहीं आयेगी वो, बेवफ़ा है
जिधर मुड़े मुड़ जाने दो

सच से कोई वास्ता नही है उसका
झूठी है वो
झूठों में झूठ बोलने गई है
जाने दो

हँसती है हमें रुला कर
गैरों की बाँहों में
हम भी हँसे थे
उनको भी हँसाने दो

वो गई है अब गैरों से रिश्ता निभाने
फिर झूठे वादे झूठी क़समें खानें

आएगी वो भी एक दिन मेरी ही फ़हरिस्त में
जिसकी हो रही है, हो जाने दो

मैं बिखरा हूँ
मुझे बिखर जाने दो

ग़मों का हिसाब

तेरे ग़मों का निवी हिसाब कौन करेगा
देकर गया है दुखों का ऋण जो तुम्हें
उसकी क़िस्तें कौन भरेगा

मसरूफ़ है वो जहाँ को खुश करने में
तुम्हें खुश कौन करेगा

लूटा आए हो एक ही शख्स पर अपना सब कुछ
दूसरा अब कोई आकर क्या करेगा

वफा का अंजाम ये होता है
तो फिर वफ़ा कौन करेगा

वो वफ़ादार होते, लड़ जाते ज़माने से हम
बेवफ़ाओं के लिए कौन लड़ेगा

तुम नहीं हो, फिर भी तुम ही तुम हो
ऐसा इश्क़ कौन करेगा

मौत से भी जो मौत माँगे
ऐसा होता है अधूरा इश्क़
ऐसी मौत भला कौन मरेगा

खानदानी

देकर पलट जाऊँ ऐसी जुबान थोड़ी है
जब मर्ज़ी आए, जब मर्ज़ी छोड़ गए
ये किराए का मकान थोड़ी है

हम कह गए मतलब निभा गए
बेवफ़ाओं का ये ख़ानदान थोड़ी है

ये जो तुम हो रहे हो कभी इसके, कभी उसके
ये ख़ानदानी लोगों का काम थोड़ी है

जिन महफ़िलों में तुम करती हो मुजरा अभी
ये गिरे हुए लोगों का काम है,
ये मेरा काम थोड़ी है

लोग कहते हैं मुझसे संभल जाओगे निवि
टूटा मैं हूँ, ये कोई अरमान थोड़ी है

ज़िद्दी था मैं उसको पाना ज़िद थी मेरी
चलो तुम जाओ मैंने वो ज़िद भी छोड़ी है

ये जो तुम हो रहे हो कभी इसके, कभी उसके
खानदानी लोगों का काम थोड़ी है

मेरी आख़िरी हार

वो मेरी आख़िरी हार थी
मेरे हर लम्हे में जो शुमार थी

वो मेरी आख़िरी मुस्कान थी साथ उसके
जिसमें ख़ुशी बेशुमार थी

जहाँ जाकर तूने छोड़ा है न मुझे
वहाँ तुम मेरी पहली याद थी

मैं मुलाक़ात के नाम से सहम जाता हूँ अब
तुझसे जो मिला था ना कभी
वो मेरी आख़िरी मुलाक़ात थी

मैं अब और कुछ हार नहीं सकता
तुझे हारा वो मेरी आख़िरी हार थी
मेरे हर लम्हे में जो शुमार थी

बगावत

ये दिल अब भी मुझसे, बगावत करता है,
जो बना कर गई है, कब्र इसको,
ये उसी पर सजावट करता है।

सुनो, तुम जाती तो पूरा जाती,
मेरे अंदर छोड़ गई हो ख़ुद को,
मेरा दिल, मुझसे ही सवाल करता है,
ये दिल अब भी मुझ से बगावत करता है।

जीते जी मारा हो जिसने मुझे,
ये दिल उसी पर मरता है,
मेरा दिल अब भी मुझसे बगावत करता है।

मैं भी अब दिल की बात, नहीं मानता हूँ,
जो मेरी नहीं, ये अब भी उसका है,जानता हूँ।

ये पागल है दिल मेरा,
अब भी तेरा ख़्याल करता है,
मेरा दिल अब भी मुझसे बगावत करता है।